प्रथम अध्याय

जीवन एवं व्यक्तित्व

प्रथम अध्याय

-- जीवन एवं व्यक्तित्व --

डा. राही मासूम रजा का जन्म एक सितम्बर १९२७ को उत्तर प्रदेश के एक शहर गाजीपुरमें हुआ। पिता हाजी सय्यद बशीर हसन आब्दी माने हुये वकील होने के कारण घरमें सुसंस्कृत वातावरण था। प्रारंभिक शिक्षा गाजीपुरमेंही हुई और एम.ए. तक की उच्च शिक्षा अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी में हुई। वहींसे " उर्दू साहित्य का भारतीय व्यक्तित्व " इस विषयपर प्रबंध लिखकर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

राही साहब का आजतक का जीवन संघर्ष और लड़ाईमें बीता है। आज उन्हें जो प्रतिष्ठा और धन दौलत मिली है, वह योंही नहीं मिली है। जीवनमें कईबार उन्हें अपनी आत्मासे सुलह करनी पड़ी है। यह सुलह उनके लिए सुलह नहीं मौतका पैगाम था। लेकिन आजके युगमें जीवन जीना है तो आत्मा को मारकरही जीना पड़ता है। इसके सम्बन्धमें उनकी राय है कि " मैं केवल एक लेखक नहीं। मैं किसीका बेटा, किसीका भाई, किसीका पति और किसीका पिता हूँ। किसीका दोस्त और किसीका दुश्मन भी हूँ।"[१] तात्पर्य यह कि व्यक्ति केवल स्वयं के लिए नहीं जीता। उसे अपने सामाजिक और पारिवारिक दायित्व को भी निभाना पड़ता है और यही दायित्व निभाने के लिए उसे अपनी आत्मासे सुलह करनी पड़ी है।

---

१ गर्दिशके दिन - संपादक - कमलेश्वर, ले. राहीमासूमरजा, पृ.सं.१११।

राहीसाहब का कहना है कि जबतक वे अकेले थे और पारिवारिक झंझटें पीछे नहीं थीं, तबतक वे अपनी आत्मासे एकनिष्ठ रहे। इसी समय उन्होंने " आधा गाँव "," टोपीशुक्ला " और " हिम्मत जौनपुरी " जैसे अच्छे उपन्यासों की रचना की। जिन्दगी के सफरमें राही कुछ दिनोंतक बंबईमें नौकरी भी कर चुके हैं और उसके बाद कुछ वर्षोंतक अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटीमें साहित्यभी पढ़ाते रहे हैं। इसीसमय साहित्य सृजन भी जारी था। अपने दोस्तके नफे के लिए नामबदलकर कहानियाँ भी लिखते थे। स्वयंको प्रगतिशील लेखक समझाते लेकिन उधर जेब खाली थी। इसीसमय एक प्रकाशकने उन्हें " गुनाह की रातें" जैसी कहानियाँ लिखने के लिए कहा और दो सौ रुपये अँडव्हान्स भी दिये। पाँच-सात पन्ने लिखभी लेकिन फिर यह ख्याल आया कि एक प्रगतिशील लेखकको ऐसी अश्लील कहानियाँ नहीं लिखनी चाहिए। उसी समय यहभी विचार आया कि वे दुनियासे तो अपना नाम छिपायेंगे लेकिन अपने आपसे कैसे छिपायेंगे। परिणामतः उन्होंने लिखे हुये पन्ने फाड़ डाले और दो सौ रुपये अँडव्हान्स भी वापस दे दिया। इस समय परिवारका बोझा कंधेपर नहीं था।

अलीगढ़में उर्दू साहित्य पढ़ाने के साथ साथ इधर कम्युनिस्ट पार्टी से भी जुड़े रहे। यहींपर साम्यवादी विचारोंने उन्हें काफी प्रभावित किया। इसी समय अब्बास हुसैनी के नामसे पार्टी के लिए समाचार पत्रोंमें लिखते रहे। उस समय पार्टी के लिए जो बुरी कविताएँ और कहानियाँ लिखी तथा दोस्त के लिए जो बाजारू कहानियाँ लिखीं उसके लिए वे आजभी शर्मिन्दा नहीं हैं। उनका कहना है " दोस्त और राजनैतिक वफादारी के सामने मैं अब भी सर झुकाने के लिए तैयार हूँ।"[१] अलीगढ़मेंही राही को जीवनकी वास्तविकताओंका पता पहली बार चला। गंदी राजनीति और कट्टर धर्मान्धता और साम्प्रदायिकता के कडुवे घूँट यहींपर पीना पड़े। उनके साम्यवादी और प्रगतिशील विचारोंसे पहलेही कुछ

---

१ परिंदा के दिन - डॉ.राही मासूमरजा - सं.-कमलेश्वर,पृ.सं.१४७।

सख्त नाराज थे । ऐसेमें एक हिन्दू मित्रसे उनकी घनिष्ठ मित्रता उन्हें जलील करनेकी वजह बनी । इसीसमय अनेक प्रकारकी गंदी और बेसिर पैर की अफवाहें फैलाकर उन्हें जलील कर उन्हें जीवन जीना मुश्किल कर दिया गया ।

यहींपर राही को उर्दू विभागमें पता चला कि सच बोलना घाटे का काम है, ईमानदारी से काम करना घाटेका काम है । उन्हें यह भी मालूम हुआ कि तरक्की करनी है तो अपने उस्ताद के आले अहमद सुरूरों और डाक्टर नुरुल हसनों को मक्खन लगाना चाहिए । लेकिन राही साहब को स्वयंपर अभिमान है कि उस समय उन्होंने इन दामोंपर तरक्की करना स्वीकार नहीं किया । उनके मन की उस समय की अवस्था उनके निम्न शेरोंमें व्यक्त हुई है --

" ये ठीक है कि अँधेरा नहीं है महफिलमें
मगर चिराग पे क्या क्या गुजर गई होगी ।
जंजीरोंमें जान पड़ी यूँ दौड़ा
मौसमे-गुल ने इतनी देर लगाई ।
ऐसा लगता है कि अँधेरा जीता
परवानों ने नाहक जान गंवाई ।
हम जिसके पीछे भागे हैं इतना
शायद परछाई थी, हाथ न आई ।" [१]

लेकिन राहीने हिम्मत नहीं हारी वे यही गुनगुनाते रहे --

" हम भी जुगनू की तरह सहरामें
शाम होती है तो जल जाते हैं ।" [२]

---

१ गर्दिशके दिन - ले.राही मासूम रजा - सं.कमलेश्वर,पृ.स.१४२ ।
२ गर्दिशके दिन - ले.राही मासूम रजा - सं.कमलेश्वर,पृ.स.१४२ ।

राही जलकर रोशनी करना जानते हैं । अपनी तकदीर पर रोते बैठना उनके स्वभावमें नहीं है । उन्होंने अलीगढ छोड दिया और बम्बई आगये । इन्हीं दिनों राहीने अपना प्रसिद्ध उपन्यास " आधा गाँव " लिखा । तीनवर्षों में लिखा, एकवर्षों में छपा और तीन सालमें बिका । मतलब सात साल के पारिश्रमिक का हिसाब लगाया तो पता चला कि " आधा गाँव " लिखने की मजूरी केवल पैंतीस रुपये उन्हत्तर पैसे प्रतिमाह मिली है । एक अच्छे उपन्यास लिखने की यह कीमत उन्हें मिली । जाहिर है कि कोई भी लेखक इसपर अपना जीवन नहीं गुजार सकता । उन्हें यह भी पता चला कि अच्छा लिखना घाटे का काम है ।

राही आज करीब तीस वर्षोंसे लिख रहे हैं कि " जिसने " आधा गाँव ", " टोपी शुक्ला ", " हिम्मत जौनपुरी ", और " ओसकी बूंद " जैसे उपन्यास लिखे हैं, वह बड़ा बहादुर आदमी था । पहले तीन उपन्यास उन दिनोंकी यादगार है जब लिखना पेशा नहीं बना था ।"[१] २०-२२ वर्षों तक लिखना पेशा नहीं था, शौक था । शोहरतें पाकर खुश हो लिया करता था । काफी मशहूर हुआ । बडे " ऑटोग्राफ " बाटे । पर उन दिनों भी दिल दुखता ही था ।"[२] राही ने हृदयकी व्यथा इन " पंक्तियोंमें व्यक्त की है --

" आज मैं अपने घर में तन्हा
तीस और तीन चिराग जलाए
सोंच रहा हूँ
आखिर मैंने क्या खोया है
आखिर मैंने क्या पाया है ..."[३]

उन्हे शिकायत है कि उनके इस दिल के दर्द में कोई भी शरीक नहीं होता । इतना ही नहीं उनके अन्दरका दूसरा आदमी भी यह दर्द नही समझाता । वे अपनी पत्नीकोभी इसमें शरीक कर उसे दुःखी नहीं बनाना चाहते । अपने

---

१. गर्दिश के दिन ले.- राही मासूम रजा - सं.कमलेश्वर ,पृ.सं.१४१ ।
२. गर्दिश के दिन ले.- राही मासूम रजा - सं.कमलेश्वर ,पृ.सं.१४४ ।
३. गर्दिश के दिन ले.- राही मासूम रजा - सं.कमलेश्वर , पृ.सं.१४४ ।

दर्द की वह मशाल लेकर वे स्वयं घूम रहे है ।

अलीगढ़ छूटा तो तकदीर ढूंढने के लिए राही बम्बई आये । साथ में एक हजार रुपये और एक अनजाने भविष्य था । बम्बई के अनजाने वातावरणमें समायोजन करना बड़ा कठिन काम था । थोडेही दिनों में बम्बई के फिल्मी जगत की वास्तविकताएँ सामने आने लगी । अभीतक टूटने के लिए तैयार नहीं थे । लेकर जोये । बम्बई में धर्मवीर भारती और कमलेश्वरने सहारा दिया । अपनी कहानियाँ लेकर निर्माताओंके दरवाजे खटखटाते । कोई पसंद भी करता तो उसमें हजार काट छाँट कर देता और अपनी बात अन्दर घुसेड देता । राही को पहले तो यह बड़ा अजीब लगा लेकिन इधर घर चलाना भी तो जरुरी हो गया था । परिणामतः उन्होंने अपने लेखकसे सुलह कर ली । उन्हें विश्वास हो गया कि " आधा गाँव " जैसी किताबे लिखकर जिंदा नहीं रहा जा सकता । आज राही लेखक से संवाद लेखक बन गये है । परिणाम यह हुआ कि " दो बरस से एक उपन्यास " कुरकीभरछूप " लिख रहा हूँ । बत्तर पन्ने लिख पाया हूँ । यह रफ्तार तब है जब लिखना पेशा बन चुका है । मेरे लेखक को वह दूसरा आदमी दबाकर बैठ गया है ।"[1] स्पष्ट है कि राही खुशी के साथ संवाद लेखक नहीं बने है । उन्हें वह जिल्लत बर्दाश्त करनी पड़ती है कि कोई भी ऐरा-गैरा कलम उठाए और उनके लिखे हुये सीन को ठीक कर दे । उनकी आत्मा अंदरही अंदर इस जिल्लत और दुःख से कराह उठती है । वे कहते है " जब सारा घर सो जाता है, तो मैं सोचता हूँ कि वह राही मासूम रजा क्या हुआ जो मेरे साथ बम्बई आया था ? मुझे अपने आपसे नफरत होने लगती है ।"[2] उनकी यह नफरत तब कम होती है जब उन्हे अपने बीवी और बच्चोंका खयाल आता है । " मैं अपनी बेटी को जिन्दा और खुश रखने के लिए एक लेखक को नहीं मार सकता ? जरुर मार सकता हूँ । और यदि आप मुझे जिंदा रखना चाहते है तो मेरी तनख्वाह कुछ बढ़ाइए । साढ़े पैंतीस रुपये माहवारमें जिन्दा रहना मेरे बसकी

---

१. गर्दिशके दिन - ले.राही मासूम रजा - सं.कमलेश्वर, पृ.सं.१५० ।

२. गर्दिशके दिन - ले.राही मासूम रजा - सं.कमलेश्वर, पृ.सं.१५० ।

बात नहीं है । इसका अर्थही यह है कि आज के इस युग में और विशेषतः "[1] बम्बई जैसे शहर में सच्चा साहित्य की निर्मिती करते हुये कोई लेखक अपना और अपने परिवार का भरणपोषण नहीं कर सकता ।

फिल्म उद्योग में रहकर भी राहीने अपना एक अलग स्थान निर्माण किया है । उन्होंने अपने लेखक के साथ सुलह जरूर कर ली है । सुलह का मतलब है कि प्रतिपक्ष थोड़ा झुक जाय और सुलह करनेवाला थोडा । राहीने अपने लेखकसे इसी तरहकी सुलह करली है । वे थोडा झुक गये है और अपने लेखकको थोडा झुकने के लिए मजबूर किया है । फिल्म उद्योग में रहकरभी उन्होंने स्वयंको पूरा तरहसे बेचा नहीं है । लिखतेसमय उन्हें हमेशा अपने पाठक और दर्शक का ध्यान रहता है । वे कहते है -- " मेरा लेखक मुझे सस्ता और अश्लील होनेसे रोकता है । मेरे लिए बाक्स ऑफिस से अलग एक जिन्दगी है जो ज्यादा महत्वपूर्ण है ।"[2] उनका फिल्म की ओर देखनेका एक विशिष्ट दृष्टिकोण है । उन्होंने बॉक्स ऑफिस को ध्यान में रखकर कभी नहीं लिखा । उनके विचारसे यह काम तो अलेखकोंका है । वे फिल्म को सामान्य जनता तक पहुँचनेका माध्यम मानते है । हमारा समाज भ्रष्ट है । उसे बदलने के लिए वे इस माध्यम का उपयोग करना चाहते है । उनके विचारसे " हमारे अशिक्षित देशमें फिल्म हीं एक माध्यम है, जिससे हम आमजनता तक पहुच सकते हैं । यही एक माध्यम है जो भाषा की बाधा तोड सकता है ।"[3] जब उनसे यह पूछा गया कि आप फिल्मों में किस उद्देश से लिखते हैं ? राही साहब का उत्तर था " मैं नहीं लिखुगा तो कोई और लिखेगा । पूरी फिल्म में कोई तो ऐसी जगह मिलेगी, जहाँ मैं कुछ कह सकूँगा । अगर फिल्म " माइथोलॉजिकल " हुई तो भी मैं उसमें राजनीतिक - सामाजिक टिप्पणी की जगह निकाल लूँगा । फिल्म संप्रेषण का माध्यम है, वे पढे-लिखे लोगोंके साथ संप्रेषण का । कला फिल्मे संप्रेषण को नकारती है,

---

१ गर्दिश के दिन - ले.राही मासूम रजा - सं.कमलेश्वर - पृ.सं.११० ।

२ भेंटवार्ता " रविवार "(साप्ताहिक) खंड-५ अंक ७ - ११ से १७ अक्तूबर,१९८१ - - पृ.१८ ।

३ भेंटवार्ता "रविवार "(साप्ताहिक) खंड-५,अंक ४७,१८ से २४ जुलाई,१९८२ - -(पृ.सं.१७)

क्योंकि उनके लिए बौद्धिक दर्शक वर्ग चाहिए । आमदर्शक तक पहुँचने के लिए व्यावसायिक फिल्मोंकाही सहारा लेना पड़ेगा "[1] राही व्यावसायिक सिनेमा के माध्यमसे निरक्षर जनता को सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियोंके प्रति जागरूक बनाना चाहते हैं । अपने लेखक के प्रति ज्यादा से ज्यादा ईमानदारी बरतनेकी कोशिश करते हैं । यही कारण है कि वे पटकथा लिखना छोड़कर संवाद लिखते हैं । पटकथा लेखन तो काफी हदतक मूलनात्मक लेखन होता है । दूसरे की लिखी पटकथामें उनका "कांशस्नेस" सम्मिलित नहीं होता । वे तो केवल यह करते हैं कि पात्रों के लिए सही संवाद क्या हो सकते हैं ? और सही संवादोंको सोचकर वे लिखते हैं ।

राहीका व्यक्तित्व एक सच्चे भारतीयका व्यक्तित्वहै । राही मासूम रजा वह व्यक्ति हैं जो मुस्लिम संस्कृतिमें पला, अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटीसे विद्याविभूषण हुआ, मुस्लिम लीगियों के बीच रहा, लेकिन फिर भी तथा कथित लीगियों की द्वन्द्वात्मक राष्ट्रीयता और धर्मान्धता से कोसों दूर रहा । राहीने देश विभाजन की प्रक्रिया को नजदीकसे देखा है । मुस्लिम लीगियों की धर्मान्धता और कांग्रेसियोंके दोगलेपनको परखा है, और इसीलिए राहीको इन लोगोंसे सख्त नफ़रत है । राही की जान तो वहाँ अटकती है जहाँ हिन्दू - मुसलमान भेद समाप्त हो जाता है । हिन्दू - हिन्दुत्वको भूलकर परम्परासे चलती आयी दोस्ती और मुहब्बत के लिए अपनी जान देने को तैयार रहता है और मुस्लिम अपनी धर्मान्धता भूलकर मानवताके धरातलपर एक हो जाते हैं । यही कारण है कि राही साहबने अपने अधिकांश उपन्यासोंमें सामान्य मुस्लिम जनता के मानस को उजागर करनेका प्रयत्न किया है । साथही हिन्दू-मुस्लिमों के परम्परागत मानवीय संबंधोंको यथार्थरूपमें सामने रखा है । वे स्वयं धर्म निरपेक्ष विचारधारा के हिमायती और मार्क्स के साम्यवादी विचारोंसे काफी प्रभावित हैं । इसके फलस्वरूप ही वे हिन्दू मुसलमानों की अन्तरात्मा को निष्पक्ष और पूर्वाग्रहरहित होकर चित्रित कर सके हैं । राहीका हृदय वास्तवमें एक कविका

---

१ भेंटवार्ता - "रविवार" (साप्ताहिक) खंड-५ -अंक ७- ११ से १७ अक्तूबर - १९८१ - पृ.सं.१८ ।

हृदय है । वे पहले कवि हैं और बादमें लेखक । उनका यह कवि उनके लेखकपर हमेशा हावी रहता है । कहीं कहींपर भावनाको बाढ उमड़कर आती है, लेखनीसे कविता अन्तयासही निझरने लगती है ।

राही मासूम रजा अपने लेखनमेंही नहीं अपने व्यक्तिगत जीवनमें भी पहले भारतीय हैं और बादमें मुसलमान । हर समस्याको वे भारतीयताके परिप्रेक्ष्यमें देखने के आदी हैं । यही कारण है कि हिन्दी और उर्दू में वे कोई अन्तरही नहीं समझते । उर्दू को हिन्दी की ही एक शैली मानकर वे चलते हैं । उनके सभी उपन्यासोंमें उर्दू और खडीबोली हिन्दी का एक ऐसा मधुर घोल दिखाई देता है कि हम किसी एक को अलग निकालकर देखही नहीं सकते । भारतीयता राही के लिए केवल नारा मात्र नहीं है, अपितु वह एक रुहानी चीज है, जिसके बिना आदमी - आदमी नहीं रहता । सच्चे अर्थोंमें राही को अपने हिन्दुस्तान से भी ज्यादा प्यार अपनी जन्मभूमि गाजीपुरसे है, वहाँ की मिट्टी और गंगा की धारा से है ।

संक्षेपमें राहीजीका व्यक्तित्व " सच्चा भारतीय नागरिक " इस एक शब्दमें समाया हुआ है ।

<u>राही मासूम रजा का साहित्य --</u>

<u>उपन्यास (हिन्दी)</u>

१) आधा गाँव	- प्रका. वर्ष	१९६६ ।
२) टोपी शुक्ला	- --,,--	१९६७-६८ ।
३) हिम्मत जौनपुरी	- --,,--	१९६९ ।
४) ओसकी बूँद	- --,,--	१९७० ।
५) दिलाक सादा कागज	- --,,--	१९७३ ।
६) सीन - ७५ -	- --,,--	१९७७ ।
७) कटरा बी आर्जू	- --,,--	१९७८ ।

जीवनी (हिन्दी) छोटे आदमी की बड़ी कहानी ।

महाकाव्य (हिन्दू - उर्दू) अठारह सौ सत्तावन ।

काव्य (हिन्दी) मैं एक फेरीवाला ।

उपन्यास (उर्दू) १) मुहब्बत के सिवा ।

२) अजनबी शहर ।

काव्य (उर्दू) १) नया साल ।

२) मौजेगुल ।

३) रूस्सेमय ।

द्वितीय अध्याय

राही मासूम रज़ा के उपन्यासों का सामान्य परिचय --

:- द्वितीय अध्याय - :

राही मासूम रजा के उपन्यासोंका सामान्य परिचय ----

(१) आधा गाँव --

डॉ. राही मासूम रजा के आजतक कुल सात उपन्यास हिन्दी में प्रकाशित हुये हैं। उनका पहला उपन्यास " आधागाँव " राजकमल प्रकाशन दिल्ली द्वारा सन १९६६ में प्रकाशित हुआ तथा अंतिम उपन्यास " कटरा बी आर्जू " राजकमल प्रकाशनसेही सन १९७८ में प्रकाशित हुआ। राही फिल्म उद्योग से जुडे होने के कारण अपने लेखन के प्रति पूरा तरहसे न्याय नहीं कर पा रहें है। जिसके कारण सन १९६६ से लेकर आजतक कुल सात ही उपन्यास वे हिन्दी जगत को दे सके है।

हिन्दी साहित्य जगत में डॉ. राही अपने पहले उपन्यास "आधागाँव" के कारण ही विशेष रूपसे चर्चा का विषय बने। " आधा गाँव " उपन्यास में अभिव्यक्त जटिलता, तीव्रता, आयामोंका वैविध्य अनुभवोंकी प्रामाणिकता और अति यथार्थवादी दृष्टि के कारण वह विशेष रूपसे चर्चा का कारण बना। लेखक का यह उपन्यास गाजीपुर जिले के गंगोली नामक एक छोटेसे गाँव की कहानी है। लेकिन यह कहानी " गंगोली" नामक पूरे गाँव की न होकर गंगोली के आधे गाँव की ही कहानी है। विशेषत: गंगोली में बसे हुये सैय्यद घरानों की यह कहानी है। यह कहानी बहु आयामी और वैविध्य लिए हुये है, जिसके कारण यह कहानी केवल गंगोली की न होकर गंगोली जैसे हजारों भारतीय ग्रामोंकी कहानी बन गई है। वह समय की कहानी बन गई है। लेखक ने अलग अलग कोनोंपर खडे होकर गंगोलीमें बसे हुये शिया मुसलमानों की धार्मिक रूढियों और विश्वासोंको, समय के साथ टूटते सामंती मूल्योंको तथा समय के साथ

परम्परावादी समाजका स्थान लेनेवाले नये सामाजिक तत्वों की कहानी बड़ी बेबाकीसे कही है। इस उपन्यास के माध्यमसे मुस्लिम जनजीवन पहलीबार अपनी समग्रता और सम्पूर्णता के साथ हिन्दी पाठकों के सामने आया है।

(२) टोपी शुक्ला --

राहीसाहब का दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास " टोपीशुक्ला" सन १९७ में प्रकाशित हुआ।" टोपीशुक्ला" की कहानी भी स्वयं की कहानी है। पाकिस्तान के निर्माण के बाद हिन्दू-मुस्लिम जनता के हृदयमें उत्पन्न भाव भूमिका स्पष्ट चित्रण राही ने इस उपन्यास में किया है। उसने देश विभाजनके बाद हिन्दू-मुसलमानों में हुये साम्प्रदायिक दंगोंको देखा है और नजदीक से अनुभव किया है। पाकिस्तान निर्माण के मुस्लिमलीगी षड्यंत्रों को भी देखा है और पाकिस्तान के हम दर्द अलीगढ़ छात्रों का कड़ा रुख अनुभव किया है। साथ ही टोपी शुक्ला जैसे कई हिन्दू दोस्तों के मुस्लिम प्यार का अनुभव भी लिया है।

"टोपी शुक्ला " एक वर्णनात्मक उपन्यास होते हुये भी वह केवल टोपीशुक्ला उर्फ बलभद्र नारायण शुक्ला,नीले तेजवाले की कहानी नहीं है। लेखकने हिन्दू मुस्लिमोंकी अंतरात्मा में पहुँचकर मानवीय संवेदनाओंको उजागर करनेका सफल प्रयास किया है। अंग्रेजोंकी कूटनीतिकी शिकार मुस्लिम जनताको कुछ मुस्लिम लीगी नेताओंने धर्म की आड़में बड़े होकर उकसाया, उनके मनमें हिन्दुस्तान और हिन्दुओंके प्रति नफरत की भावना पैदा की। परम्परा से चलते आये हुये प्रेम और भाईचारेके सम्बन्ध नफरत की आगमें जल गये। लेखकने इस आगमें घुसकर सदियों पुराने प्रेम, भाईचारा और मानवीय सम्बन्धोंको टोपीशुक्ला, इफ्फन और सकीना के माध्यमसे अभिव्यक्ति दी है। लेखक की यह अत्यंत प्रभावशाली और मर्मपर चोट करनेवाली कहानी है। टोपीशुक्ला ऐसे हिन्दुस्तानी नागरिक का प्रतीक है जो स्वयं को विशुद्ध हिन्दुस्तानी

समझता है। हिन्दू-मुस्लिम या गुप्ता - मिश्रा जैसे संकुचित नामाभिधानों को वह नहीं मानता। उसे अपने ऐसे स्वजनोंसे घृणा है जो वेश्यावृत्ति करते हुये ब्राह्मणपण बनाकर रखते हैं, पर स्वयं टोपीसे इसलिए घृणा करते हैं कि वह मुस्लिम मित्रोंका समर्थक और हामी है। अन्तमें टोपी ऐसेही लोगोंसे समझौता नहीं कर सका। वह स्वयं आत्महत्या कर लेता है।

व्यंग्यप्रधान शैलीमें लिखा हुआ यह उपन्यास आजके हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धोंको पूरी सच्चाई के साथ पेश करता है।

(२) ओस की बूँद --

लेखकका "ओसकी बूँद " उपन्यास हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धोंको यथार्थ के धरातलपर समझानेवाला एक अच्छा उपन्यास है। देश विभाजनके प्रश्न को लेकर हिन्दू-मुस्लिमोंमें अनेक दसले हुये और हजारो हिन्दू-मुसलमान उसमें मारे गये। बहू बेटियों की इज्जत लूटी गई, हजारों के घर उजाडे गये। इन दंगोंके लिए किसी खास कारण की भी आवश्यकता नहीं होती। उपन्यास के दीनदयाल और वजीरहसन गहरे दोस्त है। वजीर हसन पाकिस्तान को बनवाकर अपने को गुनहगार मानता है और पाकिस्तान के बन जानेपरभी उसी सरजमीनपर मरना चाहता है जिस सर जमीनपर उन्होंने गुनाह किये हैं। हिन्दुस्तान उनके लिए अपना घर है और यह घर नफरत और मुहब्बत दोनोंसे ऊँचा है। वजीर हसन को पाकिस्तान बनवानेवालोंपरही झल्लाहट नहीं है, उन लोगोंसेभी उसे नफरत है जिन्होंने पाकिस्तान बनने दिया।

वजीरहसन की मृत्युपर दीनदयाल यह तो मानते है कि वजीर हसन नही मरे। वे खुदही आधेमर गये हैं। इतना होनेपरभी दीनदयाल अपने धर्म को सबसे ऊपर मानते हैं। उपन्यास हिन्दू-मुसलमानों के आंतरिक सम्बन्धोंकी चर्चा करते हुये यह प्रमाणित करता है कि हिन्दू-मुसलमानोंमें हो रहे दंगोंका कारण कुछ लोगोंकी संकीर्ण धार्मिक भावनाही है। दोनों में से कुछ लोगोंने यह भूल की है

कि वे धर्म को मानवीयतासे कुछ अलग और उससे ऊपरी समझ बैठे हैं । संपूर्ण उपन्यास लेखककी मानवीय संवेदनाओंको हिन्दु-मुस्लिम पात्रों के माध्यम से उजागर करता है ।

(४) हिम्मत जौनपुरी --

राही मासूम रजा का तीसरा हिन्दी उपन्यास " हिम्मत जौनपुरी " के नामसे प्रसिद्ध हुआ । लेखकने एक साधारण व्यक्ति हिम्मत जौनपुरी का जीवन इस उपन्यासमें चित्रित किया है । उपन्यास की विशेषता यह है कि लेखक ने हिम्मत जौनपुरी के चरित्र के माध्यमसे भारतीय मुसलमानोंके संस्कारों के अन्तर्द्वन्द्व का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है । भारतीय मुस्लिम समाज आज भी अपने परम्परागत वंशाभिमान, झूटी मान्यताओं और रूढियोंसे घिरा हुआ है । इनकी हिफाजत के लिए वह बुढापेमें पत्नी को तलाक दे सकता है और पुत्र को घरसे बाहर निकाल सकता है । उपन्यासमें एक और यह चित्र है तो दूसरी ओर हिम्मत के जीवन की करुण कहानी है । हिम्मत जो हिन्दी फिल्में देखकर ऊंचे ऊंचे सपने देखता है और अम्बई आकर नाहक अपने जीवन को बर्बाद करता है ।

हिम्मत जौनपुरी अम्बई की फिल्मी दुनियाकी चकाचौंध के पीछे पागल बननेवाले हजारों युवकोंका प्रतिनिधि है ।

(५) दिल एक सादा कागद --

"दिल एक सादा कागज " लेखक के व्यक्तित्व को भलीभांति प्रस्तुत करता है । राहीने अपने जीवन में अतुल कडुवाहट झेली है । अपनी इस कडुवाहटको राहीने प्रामाणिकतासे इस उपन्यासमें रखी है । " दिल एक सादा कागज " की कहानी गाजीपुर, अम्बई और ढाके के बीच घटित घटनाओंका एक क्रम है । राही को अपने देश शहर और घरसे कहानी प्यार है । अपना घर " बेदी किला " को प्राप्त करने के लिए लेखक को स्वयंको बेचना पडा है । इस अंतरालमें अम्बई

और ढाके में घटित घटनाओंको चित्रित करते समय लेखककी यथार्थवादी दृष्टि, प्रामाणिकता, और स्वप्नको लेकर हुई मानसिक पीड़ा और उदासी उपन्यासमें सर्वत्र देखनेको मिलती है । बम्बई के फिल्मी उद्योग का अंतरंग लेखकने यथार्थरूपसे चित्रित किया है । साथही पाकिस्तान गये हुये भाई जानू और जन्नत बाजी का हाल सुनाकर उपन्यासकारने उपन्यासको रोचक, प्रभावी और यथार्थवादी बनाया है ।

(६) सीन - ७५ -

"सीन - ७५ " उपन्यास लेखकके फिल्मी दुनियाके कड़ुवे अनुभवोंको चित्रित करता है । लेखक पिछले बीस वर्षोंसे फिल्मी उद्योग से जुड़ा होने के कारण वहाँ की वास्तविकताओंको उसने नजदीकसे देखा है, परखा है और अनुभव किया है । फिल्मोंका आकर्षण देहातोंसे लेकर शहरों के लोगोंतक समान रूपसे पाया जाता है । अनेक युवक - युवतियाँ फिल्म उद्योग की जगमगाहटसे आकृष्ट होती हैं । अपने रंग-बिरंगे स्वप्नोंको और आदर्शोंको लेकर यहाँ आते हैं । एक दिन ऐसा आ जाता है कि उनके स्वप्ने चूर-चूर हो जाते हैं, आदर्श किसी अँधेरे कोनेमें फेंक देने पड़ते हैं । " सीन-७५ " की कहानी अलीअमजद नामके पटकथा लेखक की कहानी है, जो अपने आदर्श लेकर और सुन्दर स्वप्नोंको पूरा करने बम्बई आया था । बम्बई की वास्तविकताओंने उसे पूर्ण रूपसे तोड़ दिया और अंततः उसने हताश होकर आत्महत्या की ।

उपन्यास फिल्म जगत की वास्तविकताओंका पर्दाफाश करते हुये पाठकोंको फिल्म जगत की जगमगाहटके पीछे छिपी कालिमाको उजागर कर देता है ।

(७) कटरा बी आर्ज़ू -

"कटरा बी आर्ज़ू " आपात् कालीन घटनाओं और प्रभावों को लेकर चलनेवाला लेखकका प्रभावशाली उपन्यास है । लेखकने आपात्कालीन ज्यादतियोंका यथार्थ चित्रण करने के लिए इलाहाबाद का एक छोटासा मोहल्ला " कटरा मीर

मुल्लाकी " उर्फ " कटरा बी आर्जू " को चुना है । लेखक इस मोहल्ले के सामान्य लोगोंके सुख दु:खोंका, उनके बनते बिगड़ते सपनोंका चित्रण करते हुये उन्हें आपात - कालसे गुजारता है और आपात्कालकी भयानक विसंगतियों और राजनीतिके छल छद्मोंका पाठकों के सामने उद्घाटन करता है ।

उपन्यास केवल पाठकोंको आपात्कालकी सैर ही नहीं करवाता - अपितु छोटे मोहल्लेमें रहनेवाले सामान्य लोगोंके जीवन के कई पहलुओंकाभी चित्रण करता है । इस उपन्यासमें सामाजिक, मानवीय, मैत्री और पारिवारिक सम्बन्धोंका अत्यंत हृदयग्राही और प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि राही के उपन्यासों में साम्प्रदायिक एकता एवं प्रथम समस्या है । रचानुभूतियों की निवृत्ति भी एक महत्वपूर्ण विशेषता है । फिल्मी दुनिया के खोखलेपन का चित्रण करते हुए लेखक अपनी आलोचना करने से भी नहीं घबड़ाया है ।